ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-8* September- 2019
Innovation The Research Concept

हिन्दी साहित्य में ललित निबंधों की दशा व दिशा

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,हिन्दी
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
भारत

सारांश

हिन्दी में ललित निबंधों का प्रारंभ क्रम वैयक्तिकता या व्यक्तित्व की प्रमुखता से माना जाता है। ये निबंध विषयी प्रधान या व्यक्तिवाचक होते हैं। 19 वीं शदी के उत्तरार्द्ध से हिन्दी गद्य राष्ट्रीय जागरण के साथ–साथ प्रौढ़ और व्यवस्थित हुआ। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी गहन एवं गंभीर अनुभूति के द्वारा अपने ललित निबन्धों को अर्थवता प्रदान कर जीवन और जगत की मार्मिक एवं सजीव अनुभूतियों से अनुप्राणित किया है। राष्ट्रीय जीवन में अंकुरित होने वाले नवीन विचारों को सामान्य जीवन तक पहुँचाने में निबंध अति सशक्त सिद्ध हुए। प्रत्येक संभावित विषयों पर निबंधों की रचना हुई। इसी कारण भारतेन्दु युग में निबंधों की सर्जना सर्वाधिक हुई। वस्तु व्यंजक, विषय–प्रधान, एवं व्यक्तिव्यंजक, विषयी–प्रधान, ललित निबंध। दोनों ही प्रकार के निबंधों की धारा अजस्त्र गति से प्रवाहित हुई। ये निबंध जन साधारण को लक्ष्य कर सरल भाषा शैली में लिखे गये। इनका उद्देश्य मनोरंजन के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना का उद्रेक और जन उद्‌बोधन भी था। इस समय के ललित निबंधों में ''अपील भाव'' प्रधान था। व्यंग्य विनोद, विभिन्न लटकों द्वारा सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा अन्य समसामयिक विषयों पर चुटकियाँ ली गई। डॉ. विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय अद्यतन युग के सर्वश्रेष्ठ ललित निबन्धकार हैं। लोक संस्कृति नूतन चेतना और नवीन उद्‌भावना उनके ललित निबन्धों में वैयक्तिकता के स्पर्श से अभिव्यंजना कौशल का माध्यम बन गई। जबकि प्रभाकर माचवे, मदान, अज्ञेय, परसाई, शरद जोशी में क्रीड़ापरकता उभरकर सामने आई जिसने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, साहित्यिक, आदि क्षेत्रों में तहलका मचा दिया। व्यंग्यात्मक आज का युग धर्म बन गई। वास्तव में यह युग निबन्ध की सभी शैलियों का स्वर्ण युग है। निबन्धकारों के सृजनशील व्यक्तित्व ने निबन्ध साहित्य चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया। निबन्धों में रूप योजना के विकास के कारण ललित निबन्ध की कसौटी बन गया। ललित निबन्ध में स्वानुभूति के साथ–साथ सृजनात्मक अनुभूति भी विद्यमान रहती है। भाव अथवा शील (सहृदयता) की अभिव्यंजना के कारण इनकी अनुभूति की परिणति रसात्मक होती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों में शोक, निर्वेद, हास, राग, रति, विस्मय, ग्लानि, आदि भावों की परिपाक या रसात्मक अनुभूति है। पहले की तुलना में, वर्तमान में ललित निबन्धों के विषय क्षेत्र में विस्तार हुआ है। पूर्व के केवल सामान्य विषयों या लघु विषयों पर ही लिखा जाता था किन्तु अब विशिष्ट या गंभीर विषयों को भी छुआ गया है। ललित निबन्ध का क्षेत्र अब व्यापक है। निबन्धों में न केवल इन चित्रों की अभिव्यक्ति होती है अपितु सर्जनशील आत्मा की सर्जनात्मक चेतना भी प्रवाहित होती है। देशकाल सांस्कृतिक–सामाजिक आर्थिक–राजनैतिक–धार्मिक परिवेश की सुखद–दुःखद परिस्थितियाँ उसे किस प्रकार प्रभावित करती हैं तथा वर्तमान को किस प्रकार मंगलमय भविष्य में बदलना चाहता है आदि बातों का संकेत उसके कृतित्व से ही प्राप्त होता है। इस प्रकार हिन्दी के ललित निबन्धों की और लेखकों की एक लम्बी श्रृंखला है, ये निबन्ध हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। वर्तमान समय में इन ललित निबन्धों को और अधिक विस्तार देने की आवश्यकता है। फिर भी जो ललित निबन्ध उपलब्ध हैं निश्चित ही वह हिन्दी साहित्य के लिए अनमोल हैं।

प्रस्तावना

ललित निबंध विषयी प्रधान या व्यक्तिवाचक होते हैं, हिन्दी में ललित निबंधों का क्रम वैयक्तिकता या व्यक्तित्व की प्रमुखता से शुरू हुआ।

हिन्दी गद्य प्रौढ़ता की दिशा में आगे बढ़ चुका था। 19वीं शदी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय जागरण के साथ–साथ हिन्दी गद्य व्यवस्थित और प्रौढ़ हो चुका था। राष्ट्रीय जीवन की यह चेतना गद्य साहित्य के निर्माण और विकास के अनुकूल ही रही। इस चेतना एवं अनुकूल परिस्थितियों के आग्रह से प्राणदायिनी शक्ति प्राप्त कर नवजात गद्य साहित्य ने राष्ट्रीय उत्थान के रूप में जागरण का प्रसार किया। सदियों की दासता पूर्ण मनोवृत्तियों एवं रूढ़ियों से छूटकारा पाने के लिए जनमानस पीड़ित और बैचेन था। एक ओर सांस्कृतिक दासता, मायामोह और लालसा तो दूसरी ओर पुनर्जागरण की अदम्य लालसा। तभी भारतीय जनजीवन देश प्रेम की उमंग लिये सामाजिक रूढ़िवादिता, प्राचीन परंम्परा, वर्गभेद, अन्धविश्वास, आर्थिक अव्यवस्था, अन्याय, अस्पृश्यता, परतंत्रता एवं शोषण तथा दमन के विरूद्ध खड़ा हो गया। समानता, न्याय, सत्य और स्वतंत्रता के प्रश्रय एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति देकर ही गद्य साहित्य ने पोषक तत्व प्राप्त किये पाश्चात्य साहित्य के संपर्क, संचार के द्रुतगामी साधनों का प्रसार एवं प्रयास की सुविधा द्वारा पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन या ब्रहम समाज एवं आर्य समाज जैसी सभा सोसायिटियों की स्थापना ने आग में घी का काम किया। जिससे राष्ट्रीय जागरण में ही सांस्कृतिक जागरण प्रारभ्भ हुआ और कला संस्कृति तथा साहित्य के निर्माण की धारा आगे बढ़ी। इस वैचारिकता का पूरा–पूरा प्रभाव गद्य साहित्य पर भी पड़ा। युग को साहित्य से ऐसे वाणी विधान ऐसी ओजस्विता और ऐसे मार्मिक उद्‌बोधन की अपेक्षा थी, जो ग्लानिग्रस्त लोक मानस को सोने से जगा सके और उसे शक्ति तथा प्रेरणा दे सके। सौभाग्यवश इस समय भारतेन्दु एवं उनके मंडल का जन्म हो चुका था। पराधीन देश की दलित जनता में उद्धार हेतु नव–जीवन फूँकना आवश्यक था। इस तरह भारतेन्दु मंडल पर साहित्य सर्जना के साथ–साथ जन–जन तक उसे प्रचारित करने का गुरूत्तर दायित्व भी आ पड़ा था। अशिक्षित एवं धर्मान्ध जनता को नये प्रकाश की आवश्यकता थी। देश पर विदेशी शासन था। राष्ट्रीय जीवन पंगु जैसा हो गया था। निर्माण का उत्साह लिये साधनों के अभाव में भी देश भक्त साहित्यकारों ने युग की चुनौतियों को स्वीकार कर नवयुग चेतना का नेतृत्व किया। गद्य के इस प्रसार युग में समाचार पत्रों ने हिन्दी के नवीन स्परूप को जन–जन तक पहुँचाया। अतः सभी लेखक पत्रकार भी बने। पत्र–पत्रिकाओं के प्रचलन से लेखक और पाठक एक दूसरे से परिचित होने लगे। उनके बीच की दूरी निरन्तर कम होने लगी और उनका परिचय बढ़ गया। लेखक धीरे–धीरे जानने लग गये कि पाठकों की रूचि क्या है? और उन्हें किस प्रकार का साहित्य देकर उनका हित किया जा सकता है। भावों और विचारों की प्रधानता तक सरल सुबोध, शिथिल एवं स्वच्छन्द तथा रमणीय शैली के योग से ऐसे जनाभिव्यक्ति वाले साहित्य की रचना हुई जिसे उस समय लेख कहा जाता था और वर्तमान में निबंध। अतः राष्ट्रीय जीवन में अंकुरित होने वाले नवीन विचारों को सामान्य जीवन तक पहुँचाने में निबंध अति सशक्त सिद्ध हुए। प्रत्येक संभावित विषयों पर निबंधों की रचना हुई। इसी कारण भारतेन्दु युग में निबंधों की सर्जना सर्वाधिक हुई। (वस्तु व्यंजक) (विषय–प्रधान) एवं व्यक्तिव्यंजक, विषयी–प्रधान, ललित निबंध। दोनों ही प्रकार के निबंधों की धारा अजस्त्र गति से प्रवाहित हुई। ये निबंध जन साधारण को लक्ष्य कर सरल भाषा शैली में लिखे गये। इनका उद्देश्य मनोरंजन के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना का उद्रेक और जन उद्‌बोधन भी था। इस समय के ललित निबंधों में ''अपील भाव'' प्रधान था। व्यंग्य विनोद, विभिन्न लटकों द्वारा सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा अन्य समसामयिक विषयों पर चुटकियाँ ली गई।

ललित निबंध प्रारम्भिक स्वरूप–1. भारतेन्दु युग (सन् 1868–1900) –सन् 1868 में कवि वचन सुधा पत्रिका का प्रकाशन करके भारतेन्दु ने एक नये युग का शुभारम्भ किया। उन्होने इसके माध्यम से कई साहित्य रूपों को जन्म देकर जनाभिव्यक्ति को मुखर बनाया। उन्हीं की प्रेरणा से अन्य सशक्त साहित्यकार मैदान में खड़े हो गये और उनका एक मंडल तैयार हो गया। हरिशचन्द्र मैगनीज 1873, मित्र विलास 1877, हिन्दी प्रदीप 1877, मोहन चन्द्रिका 1880 आनंद कादम्बिनी 1881, ब्राम्हण 1883, भारतेन्दु 1884, पीयूष प्रवाह 1884, भारत जीवन 1884 आदि विभिन्न पत्र पत्रिकाओं ने निबंधों के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिन्दी साहित्यकारों में भारतेन्दु के उदय से नवीन विचारों का प्रकाश फैलना प्रारभ्भ हुआ। भारतेन्दु और उनके सहयोगी निबंधकारों पं. बालकृष्ण भट्‌ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र, राघवचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी, प्रेमधन, ठाकुर जगमोहन सिंह, लाला श्री निवासदास, मोहन लाल, विष्णुलाल, अंबिकादत्त व्यास, काशीनाथ खत्री, महादेव दुबे, मुरलीधर पाठक, हरमुकुन्द शर्मा, भानुदत्त गोविन्ददास प्रभाकर, हरिशचन्द्र उपाध्याय, पं. तोताराम, चन्द्रभूषण चतुर्वेदी, सदानन्द मिश्र, दुर्गाप्रसाद मिश्र आदि ने युग जीवन और परिवेश से प्रेरणा ग्रहण कर छोटे–बड़े विषयों पर लेखनी चलायी।[1] युगीन जीवन्त समस्याओं के कारण इन लेखकों को अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक विशाल क्षेत्र मिल गया। उन्होंने अपनी प्रतिभा से हिन्दी, साहित्य में जन–जीवन, समाज, राजनीति, धर्म सुधार आदि किसी भी क्षेत्र को अहुता नहीं छोड़ा। भारतेन्दु युग में सभी प्रकार की रचनाएँ हुई। सभी साहित्यिक विधाओं का परिमार्जन हुआ। पद्य में ब्रजभाषा चलती रही, किन्तु हिन्दी गद्य का रूप खड़ी बोली स्थिर होने से गद्य की अभिव्यक्ति का प्रथम उद्‌घोषक निबंध बना, और इस क्षेत्र में विशेष कार्य किया गया। इसके पूर्व निबंध का कोई निश्चित स्वरूप नहीं था। इस युग में समाज राजनीति, धर्म, दर्शन, भाषा यात्रा आदि सभी पर निबंध लिखे गये। सबसे विशेष बात यह थी कि आंग्ल भाषा की भांति ही व्यक्तित्व प्रधान निबंधों (ललित निबंधों) की संख्या भी सामने आई जो स्वयं की धारणाओं मनोभावों, एवं विचारों से संबंधित है। भारतेन्दु युग में अंग्रेजी

साहित्य के संपर्क से भारतीय जीवन में एक नवीन चेतना का उदय, पत्र–पत्रिकाओं के प्रचार तथा जनता के संपर्क में आने की साहित्यिकों की महती इच्छा के फलस्वरूप गद्य के एक नवीन विधान का स्वरूप सामने आया। सामयिक पत्र–पत्रिकाओं से संबंधित इस युग के निबंध लेखकों ने पाठकों को प्रमुखता दी और उन समस्याओं को उभारने की चेष्ठा की जिनकी तत्कालिक महत्ता थी। चाहे वह राजनीति हो या साहित्य धर्म हो या संस्कृति, रूढ़ि या रीति रिवाज सुधारात्मक विशात्मक उपेशात्मक दृष्टि उनसे अलग नहीं हो सकी। इसलिए वे जन–जीवन के अधिक निकट प्रतीत हुए। विषय वैविध्य और व्यापक प्रभाव उनकी उपलब्धियों में से एक है। निबंध लिखने में इस युग के लेखक सिद्धहस्त थे। सबसे अधिक रचनाएँ निबंधों की ही हुई। जितनी सफलता भारतेन्दु युग के लेखकों को निबंध रचना में मिली उतनी कविता, नाटक में नहीं मिली। भारतेन्दु के पूर्व राजा शिव प्रसाद सिंह, राजा लक्ष्मण सिंह, पं. श्रद्धाराम आदि प्रभूति लेखक भी हिन्दी गद्य के विकास में अपना योगदान दे चुके थे। भारतेन्दु पूर्व युग के लेखकों की रचनाओं में निबंध की झलक आ चुकी थी। राजा शिवप्रसाद सिंह कृत राजा भोज का सपना 1839 ई. एवं सदासुखलाल कृत ''सुरासुर निर्णय'' आदि कृतियाँ हैं।[2] इस युग में निबंध धारा अपनी समग्र चेतना लिए प्रवाहित हुई। विषय प्रधान वस्तु व्यंजक, विषय व्यंजक धारा की वर्णनात्मक विवरणात्मक, कथात्मक, भावात्मक, विचारात्मक और व्यक्ति व्यंजक, आत्मव्यंजक, ललित निबंध, विषयी प्रधान धारा की संवादशैली, स्वप्न कथा शैली तथा चरित्राख्यान विडंबक, स्त्रोत शैली, तथा क्रीड़ा परक आदि शैलियों के निबंधो की परम्परा समान्तर रूप से एक साथ विकसित हुई। हालांकि तत्कालीन निबंधों की सभी धाराओं में जिन्दादिली, परिहास, विनोद, व्यंग्य, आदि कथ्यों के साथ व्यक्ति व्यंजकता अवश्य झलकती है। किन्तु व्यक्तिव्यंजक अर्थात् ललित निबंध धारा में यह (व्यक्तिव्यंजकता) कुछ वैशिष्टय के साथ अवतरित हुई। इस युग के प्रतिनिधि ललित निबंधकार स्वयं भारतेन्दु जी बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने इस युग से लिखना शुरू किया था किन्तु उनकी प्रतिभा का पूर्ण विकास द्विवेदी युग में ही हुआ। ललित निबंधों का सूत्रपात किस कृति से तथा कब से हुआ। यह एक जटिल प्रश्न है। सुधी आलोचक भी एकमत नहीं है। किन्तु मान्य विद्वानों के मतो का उल्लेख करते हुए किसी निष्कर्ष पर पहुँचना समीचीन होगा। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डा. विजेयन्द्र स्नातक के अनुसार जब किसी मनुष्य ने स्वतंत्र रूप से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए स्वीकार किया तभी इस विधा का सूत्रपात हुआ होगा। हिन्दी का प्रथम व्यक्तिवादी निबंध लेखक पं. बालकृष्ण भट्ट को ही मानना चाहिये। हिन्दी प्रदीप में प्रकाशित भट्ट के निबन्धों में वैयक्तिकता का गहरा पुट पाया जाता है। बाल्यकाल नाक निगौड़ी भी बुरी बला है, आदि निबन्धों में वैयक्तिकता अनुभूति एवं रूचि–अरूचि का जैसा स्पष्ट प्रदर्शन हुआ है वैसा पहले किसी निबन्ध लेखक में नहीं मिलता। आचार्य शुक्ल व श्री रामचन्द्र तिवारी आदि ने भी भारतेन्दु को प्रथम निबन्ध लेखक माना है। प्रो. शिवनाथ एम.ए. के अनुसार ''भारतेन्दु युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही ऐसे निबन्धकार दिखाई पड़ते हैं जिन्होंने निबन्ध की सभी शैलियों में सफलता पूर्वक रचनाएँ प्रस्तुत कीं। डॉ. लक्ष्मीसागर, पं. बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी का प्रथम निबन्धकार मानते हुए भारतेन्दु जी के सम्बन्ध में लिखते हैं–''निबन्ध से तात्पर्य सच्चे साहित्यिक निबन्धों से है, जिनमें लेखक अपने आपको प्रकट करता है, विषय को नहीं। विषय तो बहाना मात्र होता है। इस दृष्टि से यद्यपि भारतेन्दु का नाम भी निबन्धकारों में लिया जाता है, किन्तु अभी यह विषय विवादास्पद है। बाबू गुलाबराय के अनुसार भारतेन्दु जी के पहले हमें हिन्दी में निबन्ध का रूप देखने के लिए नहीं मिलता। भारतेन्दु जी से ही निबन्ध प्रारम्भ हुआ। उन्हें हिन्दी निबन्ध का जन्मदाता कहा जा सकता है। डॉ. विजयशंकर के अनुसार– हिन्दी में निबन्धों की परम्परा चलाने वाले भारतेन्दु ही हैं। आगे वे लिखते हैं– भारतेन्दु जी के निबन्ध प्राथमिक प्रयास हैं, जिनमें सच्चे विषय के निबन्ध के आवश्यक गुण विद्यमान हैं। श्री जयनाथ नलिन का विचार है कि भारतेन्दु के नाटककार को तो समीक्षकों, इतिहासकारों ने पहचाना पर निबन्धकार को भुलाया ही गया। भारतेन्दु जी अपने युग के श्रेष्ठ निबन्धकार थे। नाटक में कला की व्यापक चित्रकला के पीछे भारतेन्दु छिप जाते हैं पर निबन्ध में नहीं छिप सकते। निबन्ध में वह चमकीला और प्राणवान व्यक्तित्व लेकर आए। भारतेन्दु का निज जितना स्पष्ट और साकार निबन्धों में मिलेगा, अन्य विधाओं में नहीं। इनमें शैलियाँ भी सभी मिल जायेंगी और भाषा का विवेचनात्मक गांभीर्य तो केवल निबन्धों में ही है। डॉ. रामविलास शर्मा भी निबन्धकार रूप में भारतेंदु का महत्व प्रतिपादित करते हैं–भारतेन्दु की प्रतिभा का चमत्कार जितना निबन्ध रचना में प्रकट हुआ, उतना नाटकों में भी नहीं।डॉ. जगन्नाथ शर्मा ने भी भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द को हिन्दी निबन्ध का जन्मदाता माना है–''वस्तुतः निबन्ध रचना के व्यवस्थित आरम्भकर्ता भी यही माने जा सकते हैं। इतना ही नहीं स्वस्थ और शिष्ट हास्य व्यंग्य शैली भी उन्होंने ठीक से चलायी। डॉ. विभुराम मिश्र के मत से–भारतेन्दु जी नवीन जन चेतना के अग्रदूत थे। नवीन साहित्यिक युग प्रर्वत्तक तथा सामाजिक राजनैतिक चेतना का सूत्र संचालन भारतेंदु जी के कुशल नेतृत्व में संभव हो सका। जिस प्रकार कविता और नाटकों के क्षेत्र में भारतेंदु जी की प्रतिभा मुखरित हुई थी उसी प्रकार के निबन्ध के क्षेत्र में भी उनका योगदान महत्वपूर्ण है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने निबन्ध के क्षेत्र में जितने ही सफल प्रयोग किए परन्तु उनका विशेष ध्यान नाट्य रचना, काव्य तथा इतिहास और जीवन चरित्रों की ओर ही गया, इसी कारण निबन्धकार के रूप में वे केवल प्रेरक शक्ति और सफल प्रयोगकर्ता बनकर ही रह गए। आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी के शब्दों में–निबन्ध के वास्तविक अर्थ में भारतेंदु ने उसका शिलान्यास किया भट्ट ने उसे

नागरिक बनाया तथा प्रताप नारायण मिश्र ने उसकी सीमा विस्तृत कर व्यापक रूप दिया। डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने अपने शोध ग्रन्थ आधुनिक हिन्दी साहित्य में लिखा है–भारतेंदु हरिश्चन्द्र प्रेम धन, जगमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, गोविन्द नारायण मिश्र लेखकों की ऐसी रचनाएँ मिलती हैं, जिनमें निबन्ध के कुछ लक्षण अवश्य मिल जाते हैं। किन्तु उन्हें निबन्ध न कहकर लेख कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। निबन्ध रचना के कुछ लक्षण होने पर भी निबन्ध जैसे होने चाहिए वैसे वे नहीं हैं। 19वीं शदी के उत्तरार्द्ध में निबन्ध रचना का यदि वास्तविक रूप कहीं मिलता है तो बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र की रचनाओं में मिलता है। श्री धनंजय भट्ट के अनुसार भट्ट जी यद्यपि हिन्दी के सर्वप्रथम निबन्धकार हैं फिर भी निबन्ध लिखने में अब तक वे सभी लेखकों में श्रेष्ठ माने जाते हैं। भट्ट जी की तुलना एडीसन स्टील, चार्ल्स, लैम्ब जैसे अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ लेखकों के समकक्ष की जाती है। डॉ. राम विलास शर्मा ने तो भट्ट जी को केवल प्रतापनारायण मिश्र से ही नहीं अपितु भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से भी बढ़कर माना है और लिखा है–भट्ट जी का बहुविध साहित्य जनता को अंग्रेजी राज के सच्चे रूप से परिचित कराता है। अंग्रेजों की न्याय व्यवस्था, उनकी सभ्यता उनकी राजनीति, इनके बाह्य रूपों से चमत्कृत न होकर भट्ट जी ने उनका वास्तविक रूप उद्घाटित किया। पैनी सूझ–बूझ के अलावा यह साहस का काम भी था। वह अपने युग के श्रेष्ठ क्रांतिकारी विचारक थे। इस दृष्टि से वे भारतेन्दु से भी बढ़कर थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी भट्ट जी की प्रशंसा करते हुए लिखा है–पंडित प्रतापनारायण मिश्र और पंडित बालकृष्ण भट्ट ने हिन्दी गद्य साहित्य में वही काम किया जो अंग्रेजी गद्य साहित्य में एडीसन और स्टील ने किया था। पं. बालकृष्ण भट्ट पाश्चात्य निबन्धकार एडीसन से अधिक प्रभावित थे। एडीसन के अनुसार निबन्ध में विचारधारा सरल और मिश्रित होती है, उसका प्रवाह कभी साधारण उपदेशात्मकता की ओर उन्मुख रहता है, कभी वैयक्तिक आत्माभिव्यंजना की ओर। बस इसी लक्षण के आधार पर भट्ट जी ने निबन्ध की रचना की। हिन्दी निबन्ध साहित्य में वैक्तिक कोटि के निबन्धों के तो भट्टजी प्रवर्तक भी माने जा सकते हैं। ये भावात्मक निबन्धों के भी श्रेष्ठ निबन्धकार हैं। प्रो. जयनाथ मलिन ने भट्ट जी को भारतेन्दु युग का श्रेष्ठ निबन्धकार घोषित किया है और हिन्दी का मोन्सेन माना है। डॉ. राजेन्द्र शर्मा ने अपने शोध प्रबन्ध हिन्दी गद्य के निर्माता पं. बालकृष्ण भट्ट में भट्ट जी को भारतेन्दु युग का मस्तिष्क बताया है। डॉ. विभुराम मिश्र के निष्कर्षानुसार – भारतेन्दुयुगीन निबन्धकारों में भट्टजी और मिश्र जी ही प्रमुख थे। भट्ट जी विचारात्मक निबन्धों के जनक और मिश्र रंजनात्मक निबन्धों के सूत्रपातकर्ता हैं। बाबू बालमुकुंद गुप्त मिश्र जी ने गद्य साहित्य की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहते हैं–दूसरे लोग बहुत सोच समझकर और बड़ी चेष्टा से जो खूबियाँ अपने गद्य में पैदा करते थे, वह प्रताप नारायण मिश्र को सामने पड़ी मिल जाती है। डॉ. जगन्नाथ शर्मा का विचार है कि उनकी लेखनी के हंसमुख स्वभाव ने एक नवीन पाठक समुदाय उत्पन्न किया। साधारण विषय को सरल रूप में रखकर उन्होंने सुनने वालों का विश्वास अपनी ओर आकृष्ट किया। उनके छोटे–छोटे निबन्ध, निबन्ध के सुंदर और आदर्श रूप हैं।[3] मिश्र जी के क्रियाशील उद्योग से गद्य साहित्य परिपुष्ट हुआ। डॉ. रामविलास शर्मा के मतानुसार मिश्र जी के निबन्ध हिन्दी के लिए नई चीज थे। रंजनात्मक निबन्धों के जनक और सम्राट दोनों ही मिश्र जी हैं। प्रो. शिवनाथ एम.ए. के अनुसार मिश्र जी समस्त आत्मव्यंजक निबन्धकारों के प्रतिनिधि हैं। पं. प्रतापनारायण मिश्र जीवन और साहित्य ग्रन्थ के लेखक डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं–मिश्र जी ऐतिहासिकता के साथ ही अपनी विशिष्ट और निराली शैली के लिए सदैव स्मरण किये जायेंगे। मिश्र जी का प्राणवान साहित्य हिन्दी में मिलना दुर्लभ है। डॉ. जयनाथ नालिन, मिश्र जी की निबन्ध कला के सम्बन्ध में लिखते हैं– आत्मोपता, आकार–संकोच, भाषा का चटपटापन, उछलता, उमंग भरा व्यक्तित्व, जवानी का फक्कड़पन और तेज, उक्ति चमत्कार और व्यंग्य की बौछार आदि विशेषताएँ मिश्र जी को शक्तिशाली निबन्धकार प्रमाणित करती हैं। अपने क्षेत्र में वह एक मात्र लेखक स्वयं हैं। मिश्र जी के साहित्य शोधक डॉ. शांत प्रकाश वर्मा इन शब्दों में मिश्र जी का योगदान स्मरण करते हैं–मिश्र जी देश हितैषी, समाज–सुधारक और सदाचारी प्रतिष्ठापक के व्यक्तित्व से सम्पन्न थे। अनेक दृष्टिकोणों की अभिव्यंजना उन्होंने साहित्य एवं गद्य के माध्यम से उसे सजीव और रोचक बनाकर विनोदात्मक शैली में की। उन्होंने देश और समाज को बहुत कुछ दिया है। हिन्दी साहित्य को भी दिया है और गद्य के स्वरूप तथा शैली निर्माण में तो उनका योगदान इतना अधिक और महत्वपूर्ण है कि आज का कोई भी निबन्धकार उनकी देन को अस्वीकृत नहीं कर सकता। 'कानपुर के कवि' नामक पुस्तक के लेखक श्री लक्ष्मीकांत त्रिपाठी ने लिखा है कि–पं. प्रताप नारायण मिश्र ने अपने युग का सफल प्रतिनिधित्व कर राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर किया। हिन्दी गद्य भाषा को कृत्रिमता को गढ़ढ़े से निकालकर उसे प्रौढ़, सुबोध, रोचक तथा सजीव बनाने का कार्य उन्होंने किया। डॉ. विजयशंकर मल्ल के अनुसार–पं. प्रताप नारायण मिश्र आधुनिक हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ लेखकों में हैं। हिन्दी गद्य और पद्य को नया संस्कार देने में वे अपने जमाने के किसी भी निर्माता से उन्नीस नहीं पड़ते। कुछ बातों में वे अपना सानी नहीं रखते। वे खूब चैतन्य साहित्यकार हैं। हिन्दी के निबन्ध निबन्धकारों में उनका स्थान बहुत ऊँचा है। पं. बालकृष्ण भट्ट व्यक्तित्व शोध प्रबन्ध के लेखक डॉ. मधुकर भट्ट के निर्णयानुसार कलात्मक दृष्टि से भारतेन्दु युगीन गद्य साहित्य में निबन्ध का स्थान कदाचित सर्वोच्च है और तत्कालीन निबन्धकारों में शीर्ष स्थानीय हैं–पं. बालकृष्ण भट्ट। और आगे भी

उन्होंने भट्ट जी के ललित निबन्धों के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है–जहाँ तक उनके ललित निबन्धों का प्रश्न है, उनमें विविधता और रोचकता दोनों मिलती है। भट्ट जी ने अनेक शैलियों में अनेक प्रकार के रोचक ललित निबन्ध लिखे हैं। इन निबन्धों में लेखक बहुधा पाठक से बेतकल्लुफी के साथ बात करता है। इस तरह के ललित निबन्धों में लेखक ने किसी न किसी प्रसंग में गंभीर सामाजिक आशय की प्रभावपूर्ण व्यंजना की है। इसमें संदेह नहीं कि ललित निबन्धों के क्षेत्र में भी भट्ट का प्रदेय अत्यंत मूल्यवान और महत्वपूर्ण है। श्री भारतेन्दु ने व्यक्तित्व की समग्र चेतना के लिए युग का दुर्दम नेतृत्व किया। उनकी जिन्दादिली और साहित्य सेवा ने हिन्दी साहित्य को नवीन आशा भरी दिशाएँ प्रदान की। उन्होंने आंग्ल साहित्य की वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक परम्परा में मध्यम मार्ग का अनुसरण किया। भाषा नीति में भी मध्यम मार्ग को अपनाया। साहित्य, समाज और देश सेवा सभी में उनका समन्वयकारी दृष्टिकोण था जिसके कारण भारतेन्दु युग सृष्टा बने उनके युग से निबन्धों की एक अटूट परम्परा चली। वे युग प्रेरक विभूति थे। संपादकीय टिप्पणी, लेख आदि में उनका व्यक्तित्व बहुलांश में उभरकर आया। उन्होंने और उनके सहयोगियों ने हिन्दी भाषा को स्थिरता प्रदान कर ही दम लिया। अतः, उनकी कर्म–संकुलता को भुलाया नहीं जा सकता। हालांकि यह पूर्णतया सत्य है कि आत्मव्यंजकता में उनके सहयोगी भट्ट जी और मिश्र जी उनसे बढ़ गए हों किन्तु युगीन विधाओं–साहित्य रूपों का शिलान्यास उनके द्वारा ही हुआ। आधुनिकता के अग्रदूत भारतेन्दु की प्रतिभा और क्षमता का सर्वाधिक चमत्कार निबन्ध रचना में ही दिखाई पड़ता है। मौलिक विचार सम्पन्नता तथा चतुर्मुखी उन्नति की उत्कृष्ट अभिलाषा तो उनके निबन्धों से ही प्रकट हुई, हिन्दी भाषा (खड़ी बोली) के विकास तथा उसकी प्रतिष्ठा तथा प्राण फूंकने की दिशा में भी भारतेन्दु का स्तुत्य प्रयत्न अविस्मरणीय है। भारतेन्दु के निबन्धकार व्यक्तित्व की सफलता का मूल रहस्य है, उनकी पाठकों से घनिष्ठ आत्मीयता स्थापित कर लेने में पूर्ण समर्थ होगा। भारतेन्दु ने अपने युग के निबन्धकारों को तो प्रभावित किया ही, विषय तथा भाषा शैली दोनों ही दृष्टियों से परवर्ती निबन्धकारों को भी ऋणी किया। बाद के निबन्धों में अति बौद्धिकता का समावेश हो गया।[4] **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** एवं **डॉ. कृष्णलाल** के अनुसार–पाठकों का मन रमाने के लिए अन्य उपायों की खोज आवश्यक होती है। इन उपायों में सबसे सरल उपाय बातचीत की शैली का प्रवेश है। कवि वचन सुधा के पंच का प्रपंच शीर्षक स्तम्भ में लेखक अपनी बहुत बातें पंच और किसी अन्य एक मात्र के संवाद रूप में उपस्थित करता है। 26 दिसम्बर 1871 की कवि वचन सुधा में 'बाघ की चर्चा' शीर्षक निबन्ध में इसी संवाद शैली का उपयोग किया गया है। आगे लिखा है–डॉ. जानसन की परिभाषा को चरितार्थ करने वाले मस्तिष्क के स्वच्छन्द शिथिल प्रवाह रूप के निबन्ध भी भरतेन्दु युग में लिखे गए। क्या लिखें–हरिश्चन्द्र चन्द्रिका, मोहन चन्द्रिका, अश्विन 1937 तथा मन की मौज वही पौष 1937 कुछ ऐसे ही निबन्ध हैं। प्रो. नलिन के अनुसार–पत्नी स्तव, रसाभास बालकृष्ण भट्ट सरयूपार की कथा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) में व्यक्तिवादी तथ्य मिलते हैं। ये ही हिन्दी के प्रथम व्यक्तिवादी निबन्ध कहला सकते हैं। प्रो. शिवनाथ एम. ए. के निष्कर्षानुसार भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र के आत्मव्यंजनक निबन्धों में कंकर स्त्रोत और ईश्वर बड़ा विलक्षण है। इस प्रकार के निबन्धों के लिए विषय को तुच्छता का जो निर्धारण किया गया है, वह उपर्युक्त निबन्धों में हैं। आत्मव्यंजक निबन्धों में निबन्धकार की दृष्टि विषय पर अल्प रहती है, और आत्मोदघाटन पर अत्यधिक ऐसी स्थिति में उसके लिए विषय का महत्व कुछ विशेष नहीं रहता। कभी–कभी तो विषय की तुच्छता ही आत्मव्यंजना के लिए लंबी–चौड़ी भूमिका दे देती है। डॉ. मधुकर भट्ट ने अपने शोध प्रबन्ध पं. बालकृष्ण भट्ट व्यक्तित्व और कृतित्व में भट्ट जी के ललित निबन्धों के विवेचन में पंचों की सोहबत निबन्ध का रचनाकाल–हिन्दी प्रदीप जुलाई 1978 बताया है जो अन्य ललित निबन्धों के रचनाकाल से प्रथम अनुक्रम में आता है। किन्तु आगे प्रो. शिवनाथ ने श्री प्रताप नारायण मिश्र को भारतेन्दु युग के आत्मव्यंजक निबन्धकारों का प्रतिनिधि माना है। किन्तु बालकृष्ण भट्ट का रचनाकाल सन् 1877 हिन्दी प्रदीप तथा पं. प्रतापनारायण मिश्र का रचनाकाल सन् 1833 से प्रारम्भ होता है। जबकि भारतेन्दु का रचनाकाल सन् 1868 कवि वचन सुधा से है। अतः प्रथम सर्जनाकाल सापेक्षता और कविवचन सुधा पत्रिका पृष्ठ 83–84 के 26 दिसम्बर 1971 के प्रकाशित अंक में बाघ की चरचा शीर्षक निबन्ध के आधार पर भारतेन्दु जी को प्रथम ललित निबन्धकार और उनके द्वारा सृजित निबन्ध 'बाघ की चरचा' को हिन्दी का प्रथम ललित निबन्ध माना जाना चाहिए। इस निबन्ध में चमत्कार, जिन्दादिली, मनोरंजन, हास्य–व्यंग्य, विनोद, कल्पना, संवाद आदि विद्यमान है। यदि संवाद (संलाप) शैली को निबन्ध का आधार मानते हैं तो इस निबन्ध को हिन्दी का प्रथम ललित निबन्ध मानने में आपत्ति नहीं करना चाहिए। यद्यपि इसमें कल्पित पात्रों द्वारा संवाद हैं किन्तु नाटकीय या प्रहसनीय के नियमों का अभाव है। इस प्रकार यह शिल्प की दृष्टि से संवाद या संलाप शैली का निबन्ध है। इस युग के ललित निबन्ध, संवाद चरित्राख्यान, विनोदात्मक, रोचक लेखन स्वप्न कथा या कथा स्त्रोत एवं क्रीड़ा परक आदि विभिन्न शैलियों में लिखे गए। स्वयं भारतेन्दु जी ने ही पहली बार में नैबंधिक शैलियों की स्थापना की और युग के नेतृत्व का भार उठाया। हालांकि बाद में शैली और लेखन में भट्ट जी और जिन्दादिली में मिश्र जी आगे बढ़ गये। इस युग के प्रमुख प्रतिनिधि निबन्धकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र हैं। इस युग की सृजक त्रयी (भारतेन्दु, भट्ट, मिश्र ने ही वास्तव में ललित निबन्ध धारा को अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रवाहित किया) समाज का कोई ऐसा पहलू नहीं है, जिस पर भारतेन्दु ने स्वयं निबन्ध रूप में न लिखा हो। उनके

निबन्धों में अंग्रेज और अंग्रेजियत, अंधविश्वासों आडंबरों, और देश–दुर्दशा पर तीव्र प्रहार है, व्यंग्य बड़े सधे हुए तीखे और प्रभावशाली हैं। उनके निबन्धों के दो प्रमुख संग्रह हैं–हरिश्चन्द्र कला भाग–4, बाघ की चरचा, एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न, कलिराज की सभा, कंकड़ स्त्रोत, भूषक स्त्रौत, स्त्री सेवा पद्धति, मदिरा स्तवराज, रेलवे स्त्रौत, अंग्रेज स्त्रौत, पाँचवे पैगम्बर, मुशायरा, ईश्वर बड़ा विलक्षण है। कानून तागिरात शौहर, दिल्ली दरबार, एक कहानी, आपबीती, जगबीती, स्वर्ग में विचार सभा, होली खुशी, मित्रता, अपव्यय, सरयूपार की कथा, वैद्यनाथ की यात्रा आदि अनेक प्रख्यात ललित निबन्ध हैं। विचारों एवं भावों की निर्भीकता, समसामयिकता तथा रूपविन्यास में बरती गई उदारता निबन्ध के पुराने प्रतिमानों से अपनी स्वतंत्रता घोषित करती है। सरल बोलचाल और विदेशी शब्दों के मिश्रित कौतूहल में ही ये मनोरंजन की इति श्री नहीं समझते। उन्होंने व्यंग्य के साथ विचारों का गांभीर्य भी प्रस्तुत किया। इस युग के दूसरे उल्लेखित निबन्धकार पं. बालकृष्ण भट्‌ट हैं। भारतेन्दु द्वारा प्रस्थापित परम्परा को उन्होंने ही पूर्ण रूप से बढ़ाया। वे हिन्दी प्रदीप के यशस्वी संपादक, विचार–स्वातंत्रय समर्थक एवं रूढ़ियों के कट्‌टर विरोधी थे।[5] उनके निबन्धों के विषय विविध और साधारण होते थे। इनके निबन्धों के संग्रह साहित्य सुमन, भट् निबन्धावलि भाग 1–2, धनंजय भट्‌ट, भट्‌ट निबन्ध माला, भाग 1–2 नागरी प्रचारिणी सभा काशी। इनके निबन्धों की विपुल संख्या है। लगभग एक हजार निबन्ध हैं जो कि हिन्दी प्रदीप में प्रकाशित हुए थे। हिन्दी में इतने निबन्ध अकेले निबन्धकार द्वारा आज भी नहीं लिखे गए हैं। आपने विषय प्रधान एवं विषयी प्रधान ललित निबन्ध दोनों प्रकार के निबन्धों की रचना की। व्यक्तिनिष्ठा और आत्मीयता इस युग के निबन्धों की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। अधिकांश निबन्धकार किसी न किसी पत्र–पत्रिकाओं से सम्बद्ध थे, अतः उनके निबन्धों में पाठकों की रूचि और समझ का विशेष ध्यान रखा गया। निबन्धों में विचारों की बोझिलता अथवा भावों की दुरूहता कहीं भी नहीं है। इनमें संवेदनाओं का एक तूफान उठता है, जिसके पाठक सहज तादात्म स्थापित कर लेता है और निबन्धकार उसका आत्मीय बन जाता है। ये ललित निबन्ध अत्यंत रोचक और सजीव हैं। भारतेन्दु युग में विचारात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक (कथात्मक) आदि विषय प्रधान निबन्ध प्रकारों की भी रचना हुई। तत्कालीन निबन्धों की शैली छोटे–छोटे वाक्यों वाली, व्यवहारिक भाषा प्रयोग प्रभावपूर्ण धारावाहिकता और खीझ से भरी है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा अन्य प्रकार की बुराइयों पर तीखा व्यंग्य भी करा गया है। यद्यपि इस युग की भाषा उबड़–खाबड़ और फक्कड़पन लिए हुए है, उसमें परिनिष्ठित रूप की कमी है, किन्तु जो भी उपलब्ध है वह उनके प्राथमिक प्रयास के अनुरूप है। आलोचकों की मान्यता है कि जितनी सफलता इस युग के साहित्यकारों को निबन्ध लिखने में मिली, उतनी कविता या नाटक लिखने में नहीं। इस युग में पहली बार गौण विषयों को भी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। पर यह युग आखिरकार गद्य रचना का प्रारम्भिक युग था। अतः इस युग में उच्च कोटि के कलात्मक और साहित्यिक निबन्धों की रचना संभव नहीं हो सकी। आत्मनिष्ठ निबन्ध (ललित निबन्ध) लेखन में भले ही पर्याप्त सफलता इस युग के निबन्धकारों को मिली पर वस्तुनिष्ठ निबन्धों (विषय प्रधान निबन्धों) में जिस विद्वता, गंभीरता, चिंतन पद्धति की अपेक्षा थी, वह नहीं प्राप्त होती। निबन्धों में प्रोढ़ता और सौष्ठव तथा साहित्यिकता का समावेश परवर्ती काल में ही संभव हो सका।[6]

द्विवेदी युग –हिन्दी साहित्य में द्विवेदी काल का शुभारम्भ 20वीं शताब्दी से होता है। यह निबन्ध धारा का दूसरा चरण है। इस युग में विषय और उद्‌देश्य दोनों दृष्टि से निबन्ध का पर्याप्त विकास हुआ। मुहावरे–कहावतें तथा ग्रामीणत्व कथात्मकता, स्वच्छन्द आत्माभिव्यंजना ही प्रमुख था। किन्तु इस युग में निबन्ध ज्ञानार्जन और रुचि परिष्कार का साधन बना। भाषा का संस्कार हुआ व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग तथा नागरिकता के कारण स्वच्छन्द अभिव्यक्ति पर कुछ विराम सा लग गया। किन्तु इस युग में निबन्धों में पायी जाने वाली वैयक्तिकता शनैः शनैः प्रवाहित होती रही। कुछ भावुक और सहृदय निबन्धकारों ने ही इस विधा (ललित निबन्ध) को जीवित रखा। इस युग में अधिकतर वस्तुनिष्ठ निबन्ध ही अधिक रचे गए। तुलनात्मक दृष्टि से विषयी प्रधान निबन्धों (ललित निबन्धों) की सृजना कम ही हुई। इस युग की विषय प्रधान धारा के प्रमुख निबन्धकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, गोविन्द नारायण मिश्र, गोपाल राम गहमरी, डॉ. श्याम सुन्दर दास, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, स्वामी सत्यदेव परिब्राजक, गणेश शंकर विद्यार्थी, यशोदानन्दन अखौरी, लाला भगवान दीन, किशोरीदास बाजपेयी, मिश्र बंधु, चतुर्भुज औदिच्य, गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, आदि प्रमुख निबन्धकार हैं। जबकि विषयी प्रधान (ललित निबन्ध) धारा के ललित निबन्धकार बाबू बालमुकुंद गुप्त, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', सरदार पूर्ण सिंह, पदम सिंह शर्मा आदि हैं। इस युग में आत्मव्यंजक (ललित निबन्ध) निबन्ध परम्परा क्षीण हो गई थी, केवल उपरोक्त ललित निबन्धकार ही अपनी वैयक्तिकता से इसे जीवित रख सके।

शुक्ल युग

द्विवेदी युग के उत्तर काल में उन्हीं के आदर्शों का संस्कार और परिष्कार करने वाले सर्वाधिक प्रबुद्ध निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। वे अपने युग के आकर्षण केन्द्र थे। उन्होंने निबन्ध को गंभीर विचारों के प्रकाशन का साधन बनाया। इस युग में मनोविकारों पर निबन्ध लिखे गए। इस युग के सभी निबन्धकार आचार्य हैं। आचार्य शुक्ल ने विचारात्मक (विषय प्रधान) निबन्धों को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया। निबन्ध को गद्य की कसौटी बना दिया। इस युग की विषय प्रधान धारा के निबन्धकार आचार्य शुक्ल, प्रसाद, प्रेमचन्द, डॉ. पीताम्बर बडश्वाल, धीरेन्द्र वर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, कामता प्रसाद गुरू,

हरिभाऊ उपाध्याय, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल आदि हैं। विषयी प्रधान (ललित निबन्ध) धारा के प्रमुख निबन्धकार डॉ. गुलाबराय, पदुमलाल, पुन्नालाल बख्शी, माखनलाल चतुर्वेदी, रामकृष्णदास, वियोगी हरि, चतुरसेन शास्त्री, डॉ. रघुवीर सिंह, शिवपूजन सहाय, शांतिप्रिय द्विवेदी, लक्ष्मीकांत झा आदि हैं। बाबू गुलाब राय के ललित निबन्ध संग्रह हैं–ठलुआ क्लब, कुछ गहरे कुछ उथले, मेरी असफलताएँ, फिर निराश क्यों, मन की बातें। इनमें वैयक्तिक जीवन का रोचक विवरण है। शिवपूजन रचनावली, दो घड़ी, आदि संग्रहों में उनके आत्मव्यंजक निबन्धों का संकलन है। मैं हज्जाम हूँ, माता की माया, मैं अंधी हूँ आदि निबन्धों में प्रताप नारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट की लेखनी की छटा देखने को मिलती है। पं. लक्ष्मीकांत झा ने पश्चिम के निबन्धों के आदर्श पर हिन्दी में ललित निबन्ध लिखे हैं। 'मैंने कहा' उनका प्रसिद्ध ललित निबन्ध संग्रह है। माखनलाल चतुर्वेदी, रामकृष्ण दास, वियोगी हरि, चतुरसेन शास्त्री में भावुकता से संयुक्त वैयक्तिकता की सरस धारा प्रवाहित है। शुक्ल युग में निबन्ध की अनेक शैलियों संस्मरण, रेखाचित्र, गद्यकाव्य, आदि का जन्म और विकास हुआ। पश्चिमी जीवन दर्शन और मनोविज्ञान के प्रकाश में भारतीय साहित्यिक मूल्यों का पुनराख्यान किया गया। पाश्चात्य साहित्यिक वादों और प्रयोगों की ओर निबन्धकार का आग्रह बढ़ा। शास्त्रीयता और स्वच्छन्दता का सामंजस्य भी दिखाई पड़ा। इस युग के निबन्धों में भारतेन्दु युगीन जैसी उन्मुकता, समसामयिकता और सहज आत्मीयता का अभाव है।

शुक्लोत्तर युग – शुक्लोत्तर युग में निबन्ध साहित्य का अनेकमुखी विकास हुआ। यह निबन्धों के चरम विकास एवं उत्थान का काल है। अनेक व्यक्तिवादी (वैयक्तिक) एवं समाजवादी विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा। अधिकतर साहित्य और समाज पर आलोचनात्मक निबन्धों की रचना हुई। निबन्धकारों के अनेक वर्ग हुए, एक वर्ग छायावादी भाव धारा, सौन्दर्यपरक मूल्यों तथा अनुभूतियों संवेगों से प्रभावित तथा दूसरा वर्ग मार्क्सवादी जीवन दर्शन से प्रेरित। ये प्रगतिवादी निबन्धकार सामाजिक यर्थाथवाद को प्रतिष्ठित करने में प्रयत्नशील रहे हैं। डॉ. रामविलास शर्मा, प्रकाश चन्द्र गुप्त, शिवदान सिंह चौहान, भगवतशरण उपाध्याय, आदि निबन्धकार इसी वर्ग में आते हैं निबन्धकारों का तीसरा वर्ग सामाजिक विधि–निषेधों, दमित कुंठाओं, तथा अनेक मानसिक ग्रंथियों से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक धारणाओं से प्रभावित रहा, इलाचन्द जोशी, अज्ञेय, जैनेन्द्र आदि निबन्धकार मनुष्य की अंतश्चेतना और मत की विभिन्न पर्तों को उघाड़ने का कार्य निबन्ध के माध्यम किया, संस्मरण और रेखाचित्र लेखन की शुरूआत शुक्ल युग में हुई थी। इन विधाओं का विकास भी हुआ। इनके अतिरिक्त रिपोर्ताज (सूचनिका), यात्रा विवरण, आत्मकथा, शिकार कथा आदि निबन्ध की परिधि में ही आने वाली साहित्य रूप विधाओं में भी सफल लेखन मिल गया। हास्य और व्यंग्य की अंतर्वर्ती धारा भी शनैः–शनैः प्रवाहमान होती रही। इस युग के निबन्धकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डॉ. नगेन्द्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। पंत, निराला और महादेवी वर्मा की कवि हृदय संवेदनाओं का पुंज उनकी आत्मव्यंजक निबन्ध कृतियों में देखा जा सकता है। इस युग में शांतिप्रिय द्विवेदी, राहुल जी, आचार्य बाजपेयी, सियाराम शरण गुप्त, डॉ. सत्येन्द्र, डॉ. विनय मोहन शर्मा, डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, प्रभाकर माचवे, बेनीपुरी, दिनकर, हरिशंकर शर्मा, कन्हैयालाल सहल, सदगुरू शरण अवस्थी, देवेन्द्र सत्यार्थी, चंडी प्रसाद हृदेयश, यशपाल, अमृतराय, गंगा प्रसाद पाण्डेय, भगवती चरण वर्मा, डॉ. देवरा, डॉ. जयनाथ, विलोचन शर्मा, स्वामी सत्यदेव, कन्हैयालाल मिश्र, प्रभाकर, राम प्रसाद विद्यार्थी, आदि सशक्त निबन्धकार हैं। वास्तव में इस युग में निबन्ध का बहुआयामी विकास हुआ।[7]

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि वर्तमान समय के ललित निबंधों में भाषा शैली अपनी परिपक्त अवस्था में है। तत्सम, देशज व अन्य भाषाओं के शब्दों, मुहावरों व लोकोक्तियों, उद्धरणों के व्यावहारिक प्रयोग से भाषा सजीव और प्रौढ़ बनती है। वर्तमान समय के निबन्धों में कई नवीन शैलियों जैसे आंतरिक एकालाप मोनो लाग और सूचनिका, (रिपोर्ताज) का जन्म हुआ तथा पूर्व प्रचलित सभी शैलियाँ परिष्कृत होकर विकास की ओर उन्मुख हुई। वर्तमान समय में क्रीड़ापरक या व्यंग्यात्मक शैली की प्रधानता होती जा रही है। रसात्मक तथा कलात्मक या चमत्कार प्रधान जो शक्ति या वागवैदग्धयता से सम्बन्धित है। रूप विधेयक शिल्पीय संघटन द्वारा ललित निबन्धों का कलात्मक संयोजन गठित हुआ है। इसके साथ–साथ शैलियों में संगीत, चित्रकला, नृत्यशास्त्र आदि साहित्येत्तर गुण का भी समावेश हुआ है। इस युग के ललित निबन्धों ने अनेक साहित्य रूपों को अपने भीतर आत्मसात कर अपना विकास किया है। यह ललित निबन्धों के विकास के लिए शुभ संकेत है,पहले की तुलना में, वर्तमान में ललित निबन्धों के विषय क्षेत्र में विस्तार हुआ है। पूर्व के केवल सामान्य विषयों या लघु विषयों पर ही लिखा जाता था किन्तु अब विशिष्ट या गंभीर विषयों को भी छुआ गया है। देखा जाए तो वर्तमान समय के ललित निबन्धों को और भी अधिक विस्तार देने की आवश्यकता है। फिर भी जो ललित निबन्ध उपलब्ध हैं निश्चित ही वह हिन्दी साहित्य के लिए अनमोल हैं।[8]

संदर्भ सूची

1. भट्ट बालकृष्ण एवं शर्मा राजेन्द्र– हिन्दी गद्य के निर्माता–सन्, 1998, साहित्य भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ19
2. गुप्त प्रसाद गंगा– हिन्दी साहित्य मे निबन्ध और निबन्धकार, सन्, 2000 लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 127
3. शर्मा रामविलास–भारतेन्दु युग, सन्, 1998, किताब घर, नयी दिल्ली, पृष्ठ, 95

4. गुप्त प्रसाद गंगा – हिन्दी साहित्य के निबन्ध और निबन्धकार, सन्, 2001, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ, 95
5. शर्मा विलास राम–भारतेन्दु युगीन निबन्ध, स्न,1996, गणेश प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 83
6. वर्मा बृजेश्वर – ललित निबन्ध, सन्, 1998, किताब घर, नयी दिल्ली, पृष्ठ,101
7. द्विवेदी प्रसाद हजारी – अशोक के फूल, सन्, 1995, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ,13
8. स्वयं का सर्वेक्षण एवं निष्कर्ष।